भारत में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की भूमिका

Dr. Karamveer Singh*

Associate Professor, Department of Political Science, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan

शोध संक्षेप – *राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शुरू से ही अपने आप को पूरे समाज का एक संगठन मानता रहा है। आजादी के बाद भी संघ की इस भूमिका में कोई अंतर नहीं आया। इसलिए, स्वतंत्रता के बाद 1949 में गठित संघ के संविधान में, यह भी स्पष्ट है कि यदि कोई स्वयंसेवक राजनीति में सक्रिय होना चाहता है, तो वह किसी भी राजनीतिक दल का सदस्य बन सकता है। यह संविधान भारतीय जनसंघ की स्थापना से पहले बनाया गया था। जनसंघ की स्थापना के बाद भी कई स्वयंसेवकों और प्रचारकों को देने के बाद भी इसमें कोई बदलाव नहीं हुआ है।*

लोकतांत्रिक व्यवस्था में कई दलों का होना स्वाभाविक ही है। संघ के पूरे समाज का संगठन होने के नाते, यह भी स्वाभाविक है कि समाज का कोई भी क्षेत्र संघ से अछूता नहीं रहेगा और स्वयंसेवक समाज जीवन के हर क्षेत्र में अपनी राष्ट्रीय दृष्टि रखेगा। ऐसी स्थिति में, क्योंकि कुछ स्वयंसेवक राजनीति में सक्रिय हैं, इसलिए, संघ राजनीति करता है, या यह एक राजनीतिक पार्टी है, यह कहना अनुचित और गलत होगा। राजनीतिक दल समाज के केवल एक हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं और समाज के दूसरे हिस्से का भी।

मुख्य बिंदु – *संघ की स्थापना, सर संचालक, संघ की भूमिका, संघ के कार्य और निष्कर्ष।*

---------------------------------x---------------------------------

संघ की स्थापना

27 सितंबर 1925 को विजयदशमी के दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना डॉ. केशव हेडगेवार ने की थी।

50 साल बाद 1950 में आपातकाल घोषित होने पर पहले जनसंघ को संघ के साथ प्रतिबंधित कर दिया गया था। आपातकाल हटा लिए जाने के बाद, जनसंघ का जनता पार्टी में विलय हो गया और मोरारजी देसाई के नेतृत्व में केंद्र में एक संयुक्त सरकार का गठन हुआ। इस संगठन का राजनीतिक महत्व धीरे-धीरे 1985 से बढ़ता गया और इसका समापन भाजपा जैसी राजनीतिक पार्टी में हुआ, जिसे आमतौर पर संघ की राजनीतिक शाखा के रूप में देखा जाता है। 2000 में, प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में, छक्। की संयुक्त सरकार संघ की स्थापना के 65 साल बाद, भारत के केंद्रीय प्राधिकरण पर कब्जा करने के लिए आई थी।

उद्देश्य

1. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यों का अध्ययन करना।

2. भारतीय राजनीति में संघ की भूमिका का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. आरएसएस ने भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2. भाजपा के विकास में आर एस एस का बड़ा योगदान रहा है।

आँकड़ो का संग्रहण

प्रस्तुत पत्र में, लालकृष्ण आडवाणी के राजनीतिक योगदान का अध्ययन करने के लिए प्राथमिक और माध्यमिक डेटा का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए जानकारी सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यालय, जनसंपर्क, व्यक्तिगत संपर्क, पत्रिकाओं, पुस्तकों और इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त की गई है।

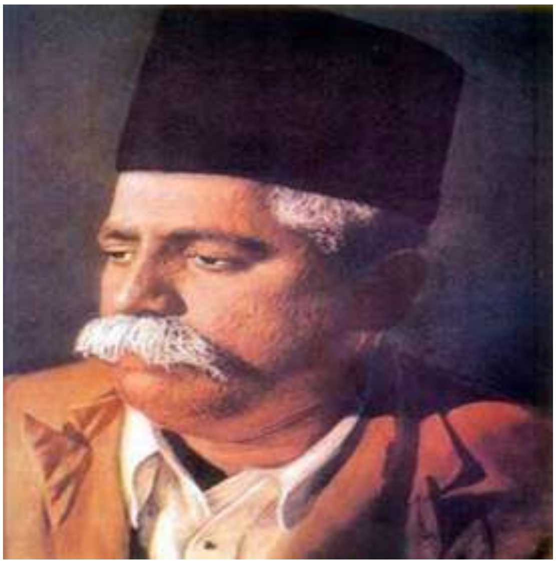

सरसंघचालक

- डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार उपाध्याय डॉक्टर (1925 - 1960)
- माधव सदाशिवराव गोलवलकर उपाख्यो गुरुजी (1980 - 1973)
- मधुकर दत्तात्रय देवरस किस्सा बालसाहेब देवरस (1973 - 193)
- प्रोफेसर राजेंद्र सिंह अनेखा रज्जू भैया (193 - 2000)
- कृपालहि सीतारमैया सुदर्शन अक्षय सुदर्शनजी (2000 - 2009)
- डॉ. मोहनराव मधुकरराव भागवत (2009 -)

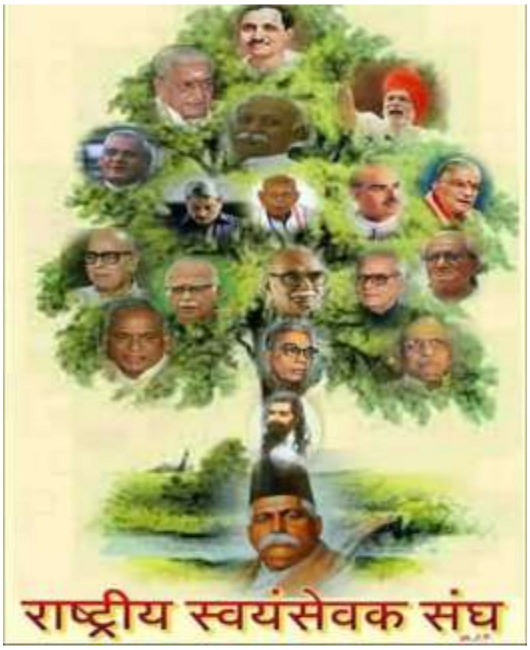

मोहन भागवत (2009 से निरन्तर)

मोहन मधुकर भागवत (जन्मः 11 सितंबर 1950, चंद्रपुर महाराष्ट्र) 2009 से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक पशु चिकित्सक और सरसंघचालक हैं। (1) उन्हें एक व्यावहारिक नेता के रूप में देखा जाता है। अपनी सेवानिवृत्ति पर उन्हें केएस सुदर्शन ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में चुना था।

संघ की भूमिका

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 90 साल का हो चुका है। 1925 में दशहरे के दिन, डॉ। केशव बलिराम हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। संघ फाउंडेशन (1925) के बाद 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने के दौरान, डॉ। हेडगेवार, अन्य स्वयंसेवकों के साथ, सत्याग्रह के लिए रवाना होने से पहले अपने सहयोगी डॉ। परांजपे को सरसंघचालक की जिम्मेदारी सौंपकर व्यक्तिगत रूप से सत्याग्रह में शामिल हुए। और इसके लिए उन्हें एक वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई थी।

आजादी के बाद, श्री गुरुजी ने गृह मंत्री सरदार पटेल के संघ को कांग्रेस में विलय करने के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया क्योंकि संघ एक पार्टी नहीं, बल्कि पूरे समाज को संगठित करना चाहता था। राजनीति में एक राष्ट्रीय विचार पार्टी की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, संघ को इस रिक्ति को भरना चाहिए, जब डॉ। श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने इसका प्रस्ताव रखा, श्री गुरुजी ने उनसे स्पष्ट कहा कि आप यह काम करते हैं, संघ आपकी मदद करेगा, लेकिन संघ करेगा पूरे समाज के संगठन का अपना काम करना जारी रखें। आपातकाल के बाद 1977 के लोकसभा चुनाव के दौरान जनता पार्टी की सरकार बनी।

“ईशावास्य उपनिषद” के पाँचवे मंत्र में आत्म तत्व का वर्णन करते समय उपनिषदकार कहते हैं द्द

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके.

तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः..

“वह आत्म तत्व चलता है और नहीं भी चलता है. वह दूर है और समीप भी है. वह सब के अंतर्गत है और वही सब के बाहर भी है.”

यह विरोधाभासी लग रहा है, अभी तक सच है।

कुछ ऐसा ही संघ पर भी लागू होता है। संघ पूरे समाज का संगठन है। और समाज का स्वरूप जटिल है। सांस्कृतिक, कार्यकर्ता, छात्र, शिक्षा, सेवा, राजनीति, धार्मिक और अन्य ऐसे क्षेत्र समाज में बने रहेंगे। ये सभी पहलू पूरे समाज के संगठन में आएंगे। लेकिन संघ किसी एक अंग का संगठन नहीं है, यह पूरे समाज का संगठन है। संघ के स्वयंसेवक सामाजिक, सांस्कृतिक, शिक्षा, राजनीति, सेवा, धार्मिक आदि सभी क्षेत्रों में सक्रिय हैं। संघ इन संगठनों में से कोई भी नहीं है। संघ किसी भी चीज से ऊपर है। वह पूरे समाज का संगठन है। उदाहरण के लिए, पुरुसूक्त में, 'पृथ्वी सहित पूरी दुनिया में उसकी दस उंगलियां शेष हैं।'

संघ के कुछ उल्लेखनीय कार्यः -

1) कश्मीर सीमा पर निगरानी, विभाजन पीड़ितों को आश्रय

अक्टूबर 1947 से, संघ के स्वयंसेवकों ने बिना किसी प्रशिक्षण के कश्मीर सीमा पर पाकिस्तानी सेना की गतिविधियों की लगातार निगरानी की। न तो नेहरू-माउंटबेटन सरकार और न ही हरिसिंह सरकार यह काम कर रही थी। उसी समय, जब पाकिस्तानी सेना की टुकड़ियों ने कश्मीर की सीमा पार करने की कोशिश की, तो सैनिकों के साथ कई स्वयंसेवकों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा करते हुए लड़ाई में अपनी जान दे दी। जब विभाजन के दंगे भड़क गए, जब नेहरू सरकार पूरी तरह से हैरान और परेशान थी, तब संघ ने शरणार्थियों के लिए 3000 से अधिक राहत शिविर स्थापित किए थे, जो पाकिस्तान से अपनी जान बचाने के लिए आए थे।

2) 1962 का युद्ध

पूरे देश ने सेना की मदद के लिए देश भर से संघ के स्वयंसेवकों के उत्साह को देखा और सराहा। स्वयंसेवकों ने सरकारी काम में और विशेष रूप से जवानों की मदद करने में - सैन्य आंदोलन के मार्गों की रक्षा करने, प्रशासन की मदद करने, रसद और आपूर्ति में मदद करने और यहां तक कि शहीदों के परिवारों के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी। जवाहरलाल नेहरू को 26 जनवरी 1963 को परेड में भाग लेने के लिए संघ को आमंत्रित करना था। आज भी, परेड को महीनों की तैयारी करनी होती है, लेकिन अभी दो दिन पहले मिले निमंत्रण पर, 3500 स्वयंसेवकों ने वर्दी में भाग लिया। निमंत्रण को आमंत्रित करने के लिए आलोचना किए जाने पर, नेहरू ने कहा- "यह दिखाने के लिए कि केवल लाठी का बल सफलतापूर्वक बम बना सकता है और सफलतापूर्वक चीनी सशस्त्र बलों से लड़ सकता है, विशेष रूप से 1963 गणतंत्र दिवस की परेड में भाग लेने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए आमंत्रित।"

3) कश्मीर का विलय

कश्मीर के महाराजा हरि सिंह विलय का फैसला करने में सक्षम नहीं थे और पाकिस्तानी सेना जनजातियों के भेस में सीमा पर जा रही थी, तब नेहरू सरकार बैठी थी - हम क्या करें - मुद्रा। सरदार पटेल ने गुरु गोलवलकर से मदद मांगी।

गुरुजी श्रीनगर पहुँचे, महाराजा से मिले। इसके बाद, महाराजा ने भारत में कश्मीर के विलय पत्र का प्रस्ताव दिल्ली भेजा। क्या बाद में महाराजा हरिसिंह के प्रति नेहरू की नफरत की जड़ थी?

4) 1965 की लड़ाई में कानून और व्यवस्था

पाकिस्तान के साथ युद्ध के दौरान, लाल बहादुर शास्त्री ने भी संघ को याद किया। शास्त्री जी ने कानून-व्यवस्था की स्थिति को संभालने और दिल्ली के यातायात नियंत्रण को संभालने में मदद करने का आग्रह किया, ताकि इन कार्यों से मुक्त किए गए पुलिसकर्मियों को सेना की मदद में तैनात किया जा सके। घायल सैनिकों के लिए रक्तदान करने वाले पहले संघ के स्वयंसेवक थे। युद्ध के दौरान, आरएसएस के स्वयंसेवकों द्वारा कश्मीर के हवाई अड्डों से बर्फ हटाने का काम किया गया था।

5) गोवा का विलय

भारत के साथ दादरा, नगर हवेली और गोवा के विलय में संघ की निर्णायक भूमिका थी। 21 जुलाई 1954 को दादरा को पुर्तगालियों से आज़ाद करवाया गया, 28 जुलाई को नरोली और फ़िपारिया को आज़ाद कराया गया और फिर राजधानी सिलवासा को आज़ाद कर दिया गया। 2 अगस्त 1954 की सुबह, संघ के स्वयंसेवकों ने भारत का झंडा उठाया और भारत का तिरंगा फहराया, पूरे दादरा नगर हवेली को पुर्तगाली कब्जे से मुक्त कराया और भारत सरकार को सौंप दिया। संघ के स्वयंसेवक 1955 से गोवा मुक्ति संघर्ष में प्रभावी रूप से शामिल हो गए थे।

नेहरू के गोवा में सशस्त्र हस्तक्षेप करने से इनकार करने पर, जगन्नाथ राव जोशी के नेतृत्व में संघ कार्यकर्ताओं ने गोवा पहुंचकर आंदोलन शुरू कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप जगन्नाथ राव जोशी सहित संघ के कार्यकर्ताओं की सजा हुई। दस साल से। जब स्थिति बिगड़ी, तो भारत को अंततः हस्तक्षेप करना पड़ा और 1961 में गोवा को आजाद कर दिया गया।

6) आपातकाल

1975 और 1977 के बीच आपातकाल के खिलाफ संघर्ष में संघ की भूमिका की स्मृति और जनता पार्टी का गठन अभी भी कई लोगों के लिए ताजा है। सत्याग्रह में हजारों स्वयंसेवकों की गिरफ्तारी के बाद, संघ कार्यकर्ताओं ने भूमिगत होकर आंदोलन शुरू किया। संघ कार्यकर्ताओं ने सड़कों पर आपातकाल के खिलाफ पोस्टर चिपकाए, जनता को जानकारी दी और जेलों में विभिन्न राजनीतिक कार्यकर्ताओं और नेताओं के बीच संवाद किया। जब लगभग सभी नेता जेलों में बंद थे, तब जनता पार्टी बनाने के लिए सभी दलों के विलय की कोशिशें संघ की मदद से ही हो सकीं।

7) भारतीय मजदूर संघ

1955 में गठित भारतीय मजदूर संघ दुनिया का शायद पहला ऐसा मजदूर आंदोलन था, जिसने विध्वंस के बजाय निर्माण की धारणा का पालन किया। भारतीय मजदूर संघ ने कारखानों में विश्वकर्मा जयंती की प्रथा शुरू की। आज यह दुनिया का सबसे बड़ा, शांतिपूर्ण और रचनात्मक श्रमिक संगठन है।

8) जमींदारी प्रथा का उन्मूलन

सीपीएम को खुद राजस्थान में कहना पड़ा जहाँ बड़ी संख्या में ज़मींदार थे कि भैरों सिंह शेखावत राजस्थान में प्रगतिशील शक्तियों के नेता हैं। संघ के एक स्वयंसेवक, शेखावत, बाद में भारत के उपराष्ट्रपति भी बने।

भारतीय विद्यार्थी परिषद, शिक्षा भारती, एकल विद्यालय, स्वदेशी जागरण मंच, विद्या भारती, वनवासी कल्याण आश्रम, मुस्लिम राष्ट्रीय मंच की स्थापना। विद्या भारती में आज 20 हजार से अधिक स्कूल, लगभग दो दर्जन शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेज, डेढ़ दर्जन कॉलेज, 10 से अधिक रोजगार और प्रशिक्षण संस्थान हैं। केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा मान्यता प्राप्त ये सरस्वती शिशु मंदिर लगभग 30 लाख छात्रों को पढ़ाते हैं और 1 लाख से अधिक शिक्षकों को पढ़ाते हैं। यह संख्या बल से भी अधिक महत्वपूर्ण है कि ये संस्थान भारतीय संस्कारों को शिक्षा से जोड़कर रखते हैं।

सेवा भारती अकेले देश भर में दूरदराज और दुर्गम क्षेत्रों में एक लाख से अधिक सेवाएं कर रही है। लगभग 35 हजार एकल विद्यालयों में 10 लाख से अधिक छात्र अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, सेवा भारती ने जम्मू-कश्मीर से आतंकवाद से अनाथ 57 बच्चों को गोद लिया है, जिनमें 38 मुस्लिम और 19 हिंदू बच्चे शामिल हैं।

9) सेवा कार्य

1971 में ओडिशा में भयंकर चक्रवात से, भोपाल की गैस त्रासदी से, 1984 के सिख विरोधी दंगों से लेकर गुजरात के भूकंप तक, सूनामी की तबाही, उत्तराखंड में बाढ़ और कारगिल युद्ध में घायल - संघ ने राहत और बचाव कार्य किया सबसे आगे रहा। न केवल भारत में, बल्कि नेपाल, श्रीलंका और सुमात्रा में भी।

निष्कर्ष

कम से कम 7-8 दशक हो गए हैं जब संघ ने सहन किया और आलोचना को सांप्रदायिक हिंदूवादी, फासीवादी और इसी तरह के शब्दों के रूप में कहा। शायद ही दुनिया के किसी संगठन की इतनी आलोचना हुई हो। वह भी बिना किसी आधार के। संघ के खिलाफ हर आरोप आखिर में एक पूरी कल्पना और झूठ साबित हुआ है। इसलिए, हम कह सकते हैं कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भारत की सामाजिक सेवा गतिविधियों के साथ-साथ राजनीति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

संदर्भ सूची:

1. एंडरसन और दामले 1987, पी। 111।

2. प्रीति गांधी (15 मई 2014)। "राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघः कैसे दुनिया के सबसे बड़े एनजीओ ने भारतीय

www.ignited.in

लोकतंत्र का चेहरा बदल दिया है”। डीएनए इंडिया। 2014-12-01।

3. “गौरवशाली 87: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आज विजयदशमी के दिन 87 वर्ष का हो गया।” Samvada अंक। २४ अक्टूबर २०१२

4. “अब तक का सबसे ऊंचा विकासः आरएसएस पिछले 12 महीनों में 5,000 नए शक को जोड़ता है”। द इंडियन एक्सप्रेस। 2016-03-16.-30।

5. जेफ हेन्स (2 सितंबर 2003)। तीसरी दुनिया में लोकतंत्र और राजनीतिक परिवर्तन। रूटलेज, pp. 168-। आईएसबीएन 978-1-134-54184-3। मूल से 23 अप्रैल 2017

6. चेतन भट्ट, हिंदू राष्ट्रवाद 2001, पी। 113।

7. चेतन भट्ट, हिंदू राष्ट्रवाद 2001, पी। 114।

8. जेलन 2002, पी। 253।

9. चितकारा, नेशनल अपसर्ग 2004, पी। 169।

10. “घोटाले को स्कैन करने के लिए मंत्री, समूह नहीं”। 4 जून 2015 मूल से

11. “परिवार की एकता में विविधता”। 4 जून 2015 मूल से

12. चितकारा, नेशनल अपसर्ग 2004, पी. 168।

13. “संग्रहीत प्रति”। 3 दिसंबर 2013 मूल से

14. के एस भारती, प्रख्यात विचारकों का विश्वकोश, खंड 7, 1998

15. “संग्रहीत प्रति”। 2 नवंबर 2007 मूल से

16. पुर्तगाल का प्रतिरोध ते के प्रवेश और गोवा के विलय के कारण था

17. शम्सुल इस्लाम, धार्मिक आयाम 2006

Corresponding Author

Dr. Karamveer Singh*

Associate Professor, Department of Political Science, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan